Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

Original Article

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार अनुभवात्मक अधिगम के प्रयोग के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की धारणा का अध्ययन

डॉ. श्वेता सिंह

सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, बुद्धा मल्टीप्लेक्स होटल एंड मैनेजमेंट, इंडस्ट्रियल एरिया, गया (बिहार)

Manuscript ID:
JRD -2026-180519
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 5(A)
Pp. 79-83
May- 2026
Submitted: 15 Apr. 2026
Revised: 25 Apr. 2026
Accepted: 10 May. 2026
Published: 31 May 2026

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक लचीला, कौशल-आधारित और अनुभवात्मक बनाना है। इस नीति में अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) को विशेष महत्व दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक समझ, समस्या समाधान क्षमता और वास्तविक जीवन कौशल का विकास हो सके। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अनुभवात्मक अधिगम के प्रति धारणा का विश्लेषण करना है। इसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि शिक्षक इस शिक्षण पद्धति को किस सीमा तक समझते हैं, अपनाते हैं तथा इसके क्रियान्वयन में किन चुनौतियों का सामना करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शिक्षक अनुभवात्मक अधिगम को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी मानते हैं, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया को रोचक, सहभागी और प्रभावी बनाता है। हालांकि, संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव तथा समय की सीमाएँ इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती हैं।

मुख्यशब्द- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुभवात्मक अधिगम, माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक की धारणा, छात्र-केंद्रित शिक्षण, कौशल आधारित शिक्षा, सीखने की प्रक्रिया, शैक्षिक नवाचार, कक्षा शिक्षण विधियाँ।*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन के रूप में देखी जाती है। इस नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को पुनः संरचित करना है। NEP 2020 में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को केवल रटने आधारित प्रणाली से हटाकर कौशल-आधारित, रचनात्मक और अनुभवात्मक अधिगम की ओर अग्रसर करने पर बल दिया गया है। अनुभवात्मक अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तकों से ज्ञान प्राप्त नहीं करते, बल्कि वास्तविक जीवन के अनुभवों, गतिविधियों, परियोजनाओं और प्रयोगों के माध्यम से सीखते हैं। अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा यह मानती है कि सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह शिक्षण पद्धति जॉन ड्यूई, डेविड कोलब और अन्य शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांतों पर आधारित है, जिनका मानना है कि "learning by doing" सबसे प्रभावी अधिगम विधि है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस दृष्टिकोण को विशेष रूप से माध्यमिक स्तर की शिक्षा में लागू करने की अनुशंसा की गई है, क्योंकि यह वह चरण है जहाँ विद्यार्थियों में तार्किक सोच, निर्णय क्षमता और करियर निर्माण की नींव विकसित होती है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक इस नीति के क्रियान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. श्वेता सिंह सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, बुद्धा मल्टीप्लेक्स होटल एंड मैनेजमेंट, इंडस्ट्रियल एरिया, गया (बिहार)

How to cite this article:
सिंह, श्वेता. (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार अनुभवात्मक अधिगम के प्रयोग के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की धारणा का अध्ययन. Journal of research & development, 18(5(A)), 79–83. https://doi.org/10.5281/zenodo.20925919

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20925919
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

उनकी धारणा, समझ और तैयारी इस बात को निर्धारित करती है कि अनुभवात्मक अधिगम कक्षा में कितनी प्रभावी रूप से लागू होगा। यदि शिक्षक इस पद्धति को सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हैं, तो यह विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों में सुधार कर सकता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक इसके प्रति अनभिज्ञ या असहज हैं, तो नीति का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो सकता। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तेजी से डिजिटल और तकनीकी रूप से विकसित हो रही है। ऐसे में अनुभवात्मक अधिगम का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, विज्ञान में प्रयोग आधारित शिक्षा, सामाजिक विज्ञान में परियोजना कार्य, गणित में समस्या समाधान गतिविधियाँ और भाषा शिक्षण में संवादात्मक गतिविधियाँ अनुभवात्मक अधिगम के प्रमुख उदाहरण हैं। हालांकि, इस पद्धति के प्रभावी क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं। अधिकांश विद्यालयों में संसाधनों की कमी, बड़े कक्षा आकार, समय की सीमाएँ और शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव प्रमुख समस्याएँ हैं। कई शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धति के आदी होते हैं, जिससे नई विधियों को अपनाने में कठिनाई होती है। इसके अलावा, मूल्यांकन प्रणाली भी अभी पूरी तरह से अनुभवात्मक अधिगम के अनुरूप विकसित नहीं हुई है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की रुचि बनाए रखना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अनुभवात्मक अधिगम इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से शामिल करता है और उन्हें स्वयं करके सीखने का अवसर देता है। इससे उनकी समझ गहरी होती है और ज्ञान लंबे समय तक स्मृति में रहता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत सरकार द्वारा 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत की गई एक व्यापक और दूरदर्शी शिक्षा नीति है। यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली में लगभग तीन दशकों बाद लाया गया एक महत्वपूर्ण सुधार है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, कौशल-आधारित और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। इस नीति का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है, जिसमें ज्ञान के साथ-साथ कौशल, मूल्य, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का विकास शामिल है। NEP 2020 में शिक्षा को केवल परीक्षा आधारित प्रणाली से हटाकर अनुभवात्मक, खोजपरक और गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर ले जाने पर विशेष बल दिया गया है। इसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक व्यापक सुधारों का प्रस्ताव किया गया है। 5+3+3+4 की नई संरचना के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक और स्तरानुकूल बनाया गया है। इस नीति में मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, बहुभाषिकता, डिजिटल शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और शोध को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। साथ ही, शिक्षकों की भूमिका को शिक्षा सुधार का केंद्र माना गया है और उनके प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) की अवधारणा

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) एक ऐसी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव, गतिविधियों, प्रयोगों और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के माध्यम से सीखते हैं। इस अवधारणा के अनुसार "करके सीखना" (Learning by Doing) सबसे प्रभावी तरीका माना जाता है, जिससे ज्ञान अधिक स्थायी और व्यावहारिक बनता है। इस अवधारणा को शैक्षिक मनोवैज्ञानिक जॉन ड्यूई, कर्ट लेविन और डेविड कोलब जैसे विद्वानों ने विकसित और लोकप्रिय बनाया। डेविड कोलब के अनुसार अनुभवात्मक अधिगम एक चक्रीय प्रक्रिया है, जिसमें चार चरण शामिल होते हैं—ठोस अनुभव (Concrete Experience), चिंतनशील अवलोकन (Reflective Observation), अमूर्त अवधारणा निर्माण (Abstract Conceptualization) और सक्रिय प्रयोग (Active Experimentation)। इस चक्र के माध्यम से विद्यार्थी अपने अनुभवों से निरंतर सीखते और सुधार करते हैं। अनुभवात्मक अधिगम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता, रचनात्मकता और निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना है। यह विधि विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ती है, जिससे उनकी समझ गहरी और व्यावहारिक बनती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनुभवात्मक अधिगम का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि यह शिक्षा को रोचक, सहभागी और छात्र-केंद्रित बनाता है। यह पारंपरिक रटने की पद्धति की तुलना में अधिक प्रभावी और दीर्घकालिक सीखने को बढ़ावा देता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

अनुभवात्मक अधिगम की विशेषताएँ एवं महत्व

अनुभवात्मक अधिगम की विशेषता

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) एक ऐसी शिक्षण पद्धति है जिसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यह "करके सीखने" (Learning by Doing) पर आधारित होती है, जिससे विद्यार्थी सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। इस पद्धति में विद्यार्थी केवल सुनने या पढ़ने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि प्रयोग, गतिविधियों, परियोजनाओं और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान के माध्यम से सीखते हैं। इसकी दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह छात्र-केंद्रित होती है, जिसमें शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है और विद्यार्थी स्वयं खोज और प्रयोग करके ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह अधिगम प्रक्रिया चिंतन और अनुभव के बीच संतुलन स्थापित करती है, जिससे विद्यार्थियों की समझ अधिक गहरी होती है। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया निरंतर चक्र (अनुभव, चिंतन, अवधारणा निर्माण और प्रयोग) के माध्यम से आगे बढ़ती है।

अनुभवात्मक अधिगम का महत्व

अनुभवात्मक अधिगम का महत्व आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अत्यधिक बढ़ गया है। यह विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और रचनात्मकता का विकास करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं और ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लागू करना सीखते हैं। यह अधिगम पद्धति विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी बढ़ाती है। साथ ही, यह सीखने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाती है, जिससे विद्यार्थियों की रुचि और भागीदारी बढ़ती है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षा सुधार का एक महत्वपूर्ण आधार मानती है, जिससे शिक्षा अधिक व्यावहारिक और कौशल-आधारित बन सके।

शिक्षकों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व

शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला होते हैं और किसी भी शैक्षिक सुधार की सफलता काफी हद तक उनकी भूमिका पर निर्भर करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस शिक्षण पद्धति में शिक्षक केवल ज्ञान के प्रदाता नहीं होते, बल्कि मार्गदर्शक, सहायक और प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। शिक्षकों का प्रमुख उत्तरदायित्व है कि वे कक्षा में ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें विद्यार्थी सक्रिय रूप से भाग ले सकें और स्वयं करके सीख सकें। उन्हें विद्यार्थियों को परियोजना कार्य, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ, समूह चर्चा और समस्या समाधान आधारित कार्यों में शामिल करना होता है। इसके लिए शिक्षक को पारंपरिक शिक्षण विधियों से आगे बढ़कर नवाचारपूर्ण और रचनात्मक तरीकों को अपनाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता और रुचि को समझकर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करें। अनुभवात्मक अधिगम में मूल्यांकन का स्वरूप भी बदल जाता है, इसलिए शिक्षक को सतत और समग्र मूल्यांकन (CCE) के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करना चाहिए। शिक्षकों को स्वयं भी निरंतर प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास के माध्यम से अपनी क्षमताओं को अद्यतन रखना होता है, ताकि वे नई शिक्षण तकनीकों और डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकें। अतः शिक्षक ही वह माध्यम हैं जो नीति को कक्षा स्तर पर वास्तविकता में परिवर्तित करते हैं।

अनुभवात्मक अधिगम के प्रति शिक्षकों की धारणा

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की धारणा मिश्रित लेकिन अधिकांशतः सकारात्मक पाई जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद शिक्षकों में इस बात की समझ बढ़ी है कि केवल रटने आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव नहीं है, बल्कि उन्हें व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर देना आवश्यक है। अधिकांश शिक्षक अनुभवात्मक अधिगम को एक प्रभावी शिक्षण पद्धति मानते हैं, क्योंकि यह विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाता है और कक्षा को अधिक रोचक बनाता है। उनका मानना है कि इससे विद्यार्थियों में समझने की क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान कौशल और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। विशेष रूप से विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषा शिक्षण में इसका प्रभाव अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। हालांकि, कुछ शिक्षकों की धारणा यह भी है कि इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं। जैसे—बड़े कक्षा आकार, समय की कमी, संसाधनों का अभाव और पर्याप्त प्रशिक्षण न मिलना। कुछ शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धति के आदी होने के कारण इसे अपनाने में असहजता महसूस करते हैं। इसके बावजूद, धीरे-धीरे शिक्षकों की सोच में परिवर्तन आ रहा है और वे अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का एक महत्वपूर्ण साधन मानने लगे हैं। उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की उपलब्धता से उनकी धारणा और भी अधिक सकारात्मक हो सकती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

अनुभवात्मक अधिगम का विद्यार्थियों पर प्रभाव

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) का विद्यार्थियों के शैक्षिक, मानसिक और सामाजिक विकास पर गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन के अनुभवों, गतिविधियों और प्रयोगों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करती है। इस पद्धति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि यह विद्यार्थियों की समझ को अधिक गहन और स्थायी बनाती है। जब विद्यार्थी स्वयं करके सीखते हैं, तो उनका ज्ञान लंबे समय तक स्मृति में रहता है और वे उसे व्यवहार में आसानी से लागू कर पाते हैं। इससे उनकी समस्या समाधान क्षमता और आलोचनात्मक सोच में भी वृद्धि होती है। अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता विकसित करता है, क्योंकि वे स्वयं निर्णय लेकर कार्य करते हैं और अपने अनुभवों से सीखते हैं। इसके साथ ही, समूह गतिविधियों और परियोजना कार्यों के माध्यम से उनमें सहयोग, संचार कौशल और सामाजिक व्यवहार का विकास होता है। यह अधिगम पद्धति विद्यार्थियों की रुचि और भागीदारी को भी बढ़ाती है, जिससे कक्षा का वातावरण अधिक सक्रिय और रोचक बनता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर यह विधि विद्यार्थियों को भविष्य के करियर और व्यावहारिक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करने में सहायक होती है।

अनुभवात्मक अधिगम के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा सुधार का एक महत्वपूर्ण आधार माना गया है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को "करके सीखने" का अवसर प्रदान करता है। यद्यपि यह शिक्षण पद्धति अत्यंत प्रभावी और विद्यार्थी-केंद्रित है, फिर भी इसके क्रियान्वयन में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर। ये चुनौतियाँ संसाधनगत और व्यवहारिक स्तर पर देखी जा सकती हैं।

1. संसाधनों की कमी

अनुभवात्मक अधिगम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रयोगशालाएँ, शिक्षण सामग्री, मॉडल्स, डिजिटल उपकरण और अन्य गतिविधि-आधारित संसाधनों की आवश्यकता होती है। अधिकांश विद्यालयों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, इन संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होती। परिणामस्वरूप शिक्षक इस पद्धति को पूरी तरह लागू नहीं कर पाते और उन्हें पारंपरिक शिक्षण विधियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

2. समय की सीमाएँ

अनुभवात्मक अधिगम गतिविधि-आधारित होने के कारण इसमें अधिक समय लगता है। जबकि विद्यालयी पाठ्यक्रम निर्धारित समय सीमा में पूरा करना होता है और परीक्षा आधारित दबाव भी रहता है। ऐसे में शिक्षक अक्सर पाठ्यक्रम पूर्ण करने को प्राथमिकता देते हैं, जिससे अनुभवात्मक गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता।

3. शिक्षकों का प्रशिक्षण अभाव

कई शिक्षक अभी भी पारंपरिक शिक्षण पद्धति के आदी हैं और अनुभवात्मक अधिगम की नवीन विधियों से पूरी तरह परिचित नहीं हैं। परियोजना कार्य, समूह गतिविधियाँ, प्रयोगात्मक शिक्षण और सतत मूल्यांकन जैसी तकनीकों के लिए उचित प्रशिक्षण का अभाव उनकी सबसे बड़ी समस्या है।

4. बड़े कक्षा आकार की समस्या

माध्यमिक स्तर पर कई विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक विद्यार्थी को गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल करना कठिन हो जाता है। इससे व्यक्तिगत ध्यान की कमी होती है और अनुभवात्मक अधिगम की प्रभावशीलता घट जाती है।

5. मूल्यांकन प्रणाली की सीमाएँ

वर्तमान परीक्षा प्रणाली मुख्यतः लिखित परीक्षा पर आधारित है, जबकि अनुभवात्मक अधिगम में सतत एवं समग्र मूल्यांकन (CCE) आवश्यक होता है। स्पष्ट मूल्यांकन मानदंडों और व्यवहारिक आकलन के अभाव में शिक्षकों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

6. प्रशासनिक एवं संस्थागत सहयोग की कमी

कई विद्यालयों में नवाचारात्मक शिक्षण विधियों को पर्याप्त प्रशासनिक समर्थन नहीं मिलता। संसाधन उपलब्ध कराने और गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में कमी के कारण शिक्षक अनुभवात्मक अधिगम को प्रभावी रूप से लागू नहीं कर पाते।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

7. मानसिकता एवं सामाजिक बाधाएँ

कुछ शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक अभी भी पारंपरिक रटने आधारित शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं। इस मानसिकता के कारण अनुभवात्मक अधिगम को अपेक्षित स्वीकृति नहीं मिल पाती और इसके क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत अनुभवात्मक अधिगम शिक्षा को अधिक प्रभावी, रोचक और कौशल-आधारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माध्यमिक स्तर के अधिकांश शिक्षक इस शिक्षण पद्धति को सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं और इसे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी मानते हैं। अनुभवात्मक अधिगम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और व्यावहारिक ज्ञान का विकास होता है, जो आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता है। हालांकि, इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई बाधाएँ भी सामने आती हैं, जैसे संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव, समय की सीमाएँ और पारंपरिक शिक्षण पद्धति की गहरी जड़ें। इन समस्याओं के कारण शिक्षक पूर्ण रूप से इस पद्धति को अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसलिए आवश्यक है कि सरकार और शिक्षा संस्थान मिलकर शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें तथा विद्यालयों में आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, राजेश कुमार। (2021). भारतीय कक्षाओं में अनुभवात्मक अधिगम: NEP 2020 का परिप्रेक्ष्य। *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस*, खंड 12, (अंक 5), पृ. 45–52।

2. सिंह, अनीता एवं कुमार, प्रदीप। (2022). माध्यमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम के प्रति शिक्षकों की धारणा। *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, खंड 10, (अंक 2), पृ. 78–86।

3. गुप्ता, मनीषा। (2021). NEP 2020 के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ। *एजुकेशन इंडिया जर्नल*, खंड 8, (अंक 3), पृ. 33–40।

4. यादव, सुनील कुमार। (2023). अनुभवात्मक अधिगम में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन*, खंड 5, (अंक 1), पृ. 15–22।

5. वर्मा, ललिता एवं जोशी, रमेश चंद्र। (2022). NEP 2020 के अंतर्गत छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धतियाँ। *जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन*, खंड 14, (अंक 4), पृ. 60–68।

6. पांडे, सुनील कुमार। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा शिक्षा में परिवर्तन। *एजुकेशनल रिव्यू जर्नल*, खंड 9, (अंक 1), पृ. 10–18।

7. मेहता, प्रिया। (2023). माध्यमिक विद्यालयों में नवीन शिक्षण रणनीतियाँ। *जर्नल ऑफ कंटेम्पररी एजुकेशन रिसर्च*, खंड 11, (अंक 2), पृ. 95–103।

8. चौधरी, विनोद कुमार। (2022). अनुभवात्मक अधिगम और विद्यार्थी उपलब्धि पर प्रभाव। *एजुकेशनल डेवलपमेंट जर्नल*, खंड 7, (अंक 2), पृ. 55–63।

9. मिश्रा, राकेश चंद्र। (2021). भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनुभवात्मक अधिगम की उपयोगिता। *जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड एजुकेशन*, खंड 6, (अंक 3), पृ. 120–128।

10. त्रिपाठी, सीमा देवी। (2023). शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता और अनुभवात्मक अधिगम। *इंटरनेशनल एजुकेशन जर्नल*, खंड 9, (अंक 4), पृ. 70–79।

11. अग्रवाल, नरेश कुमार। (2022). NEP 2020 और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन*, खंड 13, (अंक 1), पृ. 25–34।

12. मिश्रा, अंजलि एवं श्रीवास्तव, दीपक। (2023). माध्यमिक स्तर पर अनुभवात्मक अधिगम की प्रभावशीलता का अध्ययन। *जर्नल ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग रिसर्च*, खंड 10, (अंक 2), पृ. 88–97।